मनसा सेवा - 73

अव्यक्त बापदादा :- (18/01/1999)

➳ _ ➳ तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रह्मा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहा है। हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। होते हुए वैराग्य वृत्ति हो। आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ। समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य।

➳ _ ➳ सेवा का विस्तार इस वर्ष में बहुत किया। इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? को और संबंध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएं। इसके लिए एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे। उन्हों की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल आवश्यक है।

➢➢ साधना का वायुमंडल कैसे तैयार करें ?

➳ _ ➳ **जो भी इस वातावरण में आये उसमें फिर से तपस्या का उमंग जग जाय, स्वतः वैराग्य आ जाय, तपस्या की आग फिर से प्रज्वलित हो जाय**

➳ _ ➳ अपने ही भीतर के तपस्वी को जगाना है, वैरागी को जगाना है

➳ _ ➳ **इसके लिए स्वयं को पहले जगाना है, हम जगे तो विश्व में प्रकाश होगा, हम विश्व के नूर हैं, तपस्या, साधना का दीपक जगाना है, वैराग्य का वायुमंडल तैयार करना है**

➳ _ ➳ **ज्ञानयुक्त वैराग्य, विवेकयुक्त वैराग्य जगाना है जो शाश्वत होगा, क्षणिक नहीं, परिस्थिति जनित नहीं**

➳ _ ➳ संसार के सभी मनुष्य अपूर्ण हैं, सिर्फ एक परमात्मा पूर्ण हैं, अपूर्ण से पूर्ण की अनुभूति नहीं हो सकती

→ **हमारी खोज पूर्ण की, अनंत की खोज है, आत्मा अनंत है, अनंत के अतिरिक्त आत्मा को कोई भी संतुष्ट नहीं कर सकता है, व्यक्तियों से प्रेम करना और उनसे संतुष्टि प्राप्त करने की इच्छा अंततोगत्वा फिर से दुखी बनाएगी**

➳ _ ➳ वैराग्य उत्पन्न करने एक परमात्मा के प्रेम में डूब जाओ और दूसरा संसार के प्रति दोष दृष्टि

➳ _ ➳ वैराग कहीं से भागना नहीं है, मनुष्यों से भागना नहीं है

➳ _ ➳ **हमारा वैराग्य कोई व्यक्ति, परिस्थिति पर निर्भर ना हो**

➳ _ ➳ साधना का वायुमंडल

→ **अपना तपस्या का टाइम टेबल खुद बनाना है**

→ जनरल अलग और अपनी पर्सनल टाइम टेबल अलग बनाना है

- **क्योंकि मेरी कमियों को मेरे से अधिक कोई नहीं जानता**

- कहाँ पर मेरा मन फंसा हुआ है, कहाँ पर अटेंशन की कमी है
  - सहज अटेंशन हो

➳ _ ➳ साधनों के वशीभूत नहीं होना है

→ **आज सबसे बड़ा साधन है मोबाइल- Cell Phone Addiction**

- नेटवर्क बंद हो तो डिप्रेशन सा छा जाता है
  - **बाबा ने कहा-साधन जितना आवश्यक है उतना ही यूज़ करो**
  - **ज्ञान, योग सेवाओं के लिए आवश्यक तो है परन्तु एडिक्शन ना बन जाए**
  - **अगर वो चला जाए तो कोई बेचैनी ना हो**

→ **चेक करना है और कोई साधन है जिस पर हम निर्भर हो गए हैं**

→ **साधनों के इतने वशीभूत नहीं की साधना ही बंद हो जाए**

→ **बाकि चीजों, साधनों के लिए भी चेक करना है की क्या ये चीज कल नहीं रहेगी तो क्या हम अडोल रह सकते हैं ?**

→ **व्यक्तियों के लिए भी**

- **ये व्यक्ति कल नहीं रहेगा तो क्या हमारी साधना वैसी रहेगी**
- **मन के किसी कोने में सूक्ष्म डिपेंडेंस, इसकी विधि है चेक करना**
- **चेक करते-करते ही उससे अनासक्ति उत्पन्न हो जाती है**
- **किसी भी चीज, स्थान, particular सेवा पर भी निर्भर नहीं**
- **अचानक कहीं पर भी जाना पड़े तो भी तुरंत स्वयं को मोल्ड कर लेना**

➳ _ ➳ वैराग्य, तपस्या और साधना इन तीन चीजों को अपने अंदर धारण करना, उसका वायुमंडल बनाना

→ **उसका वायुमंडल तब फैलेगा जब हमारे अंदर ये सारी चीजें बहुत ज्यादा हो**

- ये संसार वाली चीजें नहीं है जिसको फैला दें, ये बहुत सूक्ष्म बातें हैं, वृत्ति से वृत्ति बदलती है

→ किस-किस बात पर हम निर्भर हैं ये चेक करना है

- **हमारी खुशी का Remote किसी और के पास तो नहीं है**
- **इस पथ पर हर एक अकेला है, कोई कितना भी स्नेही, घनिष्ट, सहयोगी हो, एक बाप दूसरा ना कोई**

- भक्ति की किसी बात या भक्ति की संस्कारों पर भी निर्भर नहीं
  - किसी से भी कुछ भी मांगना नहीं, सहज मिल जाए तो अच्छा है
  - **दादी जानकी ने कहा- बाबा को आश्रम शब्द भी पसंद नहीं था, बाबा कहते हैं ये भक्ति का शब्द है, सेंटर बोलो**
- मन की निराधार अवस्था, केवल एक आधार
  - उस एक आधार के लिए स्वयं के अंदर प्राप्तियों की अनुभूति होनी चाहिए
  - **कुछ भी अप्राप्त नहीं मुझे सब मिल गया -ये अनुभव हो**